International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 20-11-2019; Accepted: 21-12-2019
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 1; January 2020; Page No. 62-66

'सकुबाई' नाटक में स्त्री अस्मिता

डॉ. राधामणि.सी

हिंदी विभाग] गवर्नमेंट आर्ट्स एंड साइंस कॉलेज, केरल, भारत

1. प्रस्तावना

भारतीय संविधान में स्त्री और पुरुष को समान अधिकार दिया गया है|लेकिन वर्चस्व की दृष्टि से पुरुष स्वामी और स्त्री गुलाम है| आज भी स्त्री रूढ़ियों और रिवाजों की दासी है| फिर भी वह सजग है | उच्च वर्ग की स्त्री हो या निम्न वर्ग की, संभ्रांत हो या गरीब, सब अपना जीवन स्वतंत्रता, समानता और आत्मनिर्भरता से जीना चाहती है |आज वह अपनी मुक्ति के लिए संघर्ष कर रही है |इस संघर्ष को हम स्त्री विमर्श के नाम से पुकारते हैं |अस्मिता की स्थापना , पुरुष के बराबर का अधिकार, शोषण से मुक्ति, आदि ही स्त्री विमर्श के मुख्य मुद्दे हैं | आज की स्त्री अपना व्यक्तित्व या सिग्नेचर कहीं अंकित करना चाहती है |उसे ही हम स्त्री अस्मिता कहते हैं | शैक्षिक रूप से स्त्री को प्रगति मिली है| कुछ स्त्रियाँ समाज के उच्च पद पर शोभित हैं ,फिर भी पुरुष - वर्चस्ववादी व्यक्ति के रूप में उन्हें देखने का प्रयास अब भी नहीं करते| मृणाल पण्डे के अनुसार "नारीवाद पुरुषों का नहीं, उसकी मानवीयता घटानेवाले उस छद्म मुखौटे का प्रतिकार करता रहा है,जो मर्दानगी के नाम पर गढा गया है "|(1) असल में नारी का संघर्ष पुरुष से मुक्ति पाने के लिए नहीं, बल्कि नारी की जो ताकत है वह अर्जित करने के लिए है ,समाज को दिखाने के लिए है कि हम भी समान अधिकार से युक्त मानवजाति के ही अंग हैं | इसके लिए संघर्ष कर अपनी अस्मिता ,अस्तित्व या अपनी सत्ता दिखाकर अपना स्थान जमा करना उसके लिए अनिवार्य है | स्त्री शोषण से मुक्त समाज का सपना वह देख रही है |जब तक स्त्री शोषण से मुक्त नहीं, तब तक स्त्री विमर्श की प्रासंगिकता बढती रहेगी |

आज के साहित्य में समाज का ताज़ा चित्र उकेरने का प्रयास साहित्यकार करता है| यह समय की मांग भी है | साहित्य की हर विधाओं में स्त्री लिखती जा रही है | स्त्री के बारे में पुरुष भी लिखता है ,फिर भी स्त्री लेखन में अनुभव की जो ताजगी है,वह पुरुष लेखन में आ जाना नामुमकिन है | हिंदी में स्त्री विमर्श की धारा में प्रभा खेतान , क्षमा शर्मा , रोहिणी अग्रावाल, रमणिका गुप्ता, रेखा कस्तवार,डॉ. ऋचा शर्मा,मृणाल पाण्डे ,नासिरा शर्मा डॉ. के.एम. मालती,सुशीला टाकभौरे आदि की ख़ास पहचान है | हिंदी साहित्य की विविध विधाओं में भी स्त्री की पैनी कलम चल रही है |

नाटक के क्षेत्र में भी स्त्री नाटककारों ने अपनी शख्सियत की पहचान करायी है| सृजन ही स्त्री का स्वरूप है, मनुष्य की रचना ही उसकी शक्ति है मानकर समकालीन पुरुष नाटककरों के समान महिला नाटककार भी सदियों से दबी - कुचली और अस्मिता खोयी स्त्री

2. को अस्मिताबोध से युक्त स्त्री बनाने का काम कर रही हैं |भारतेंदु,धर्मवीर भारती ,मोहन राकेश,सुरेन्द्र वर्मा,रमेश बक्षी ,भीष्म सहनी, शंकर शेष, प्रभाकर श्रोत्रीय ,नन्दकिशोर आचार्य ,नाग बोड्स, रामेश्वर प्रेम, कृष्णा बलदेव वैद आदि के नाटकों में हम देखते हैं कि स्त्री अपनी अस्मिता के लिए विद्रोह करती है | महिला नाटककार संख्या में बहुत कम है| फिर भी स्त्री नाटककारों ने नारी अन्तर्मन को विश्वसनीय ढंग से प्रस्तुत करने का

सराहनीय कार्य किया है| इन नाटककारों ने नाट्यलेखन के क्षेत्र में अपनी जमीन बनायीं है |स्वातंत्र्योत्तर हिंदी महिला नाटककारों में श्रीमती लालीदेवी,अनुरूपा देवी, कुटुमप्यारी देवी सक्सेना ,तारा प्रसाद वर्मा,शिवकुमारी देवी,शारदा देवी मिश्र (पारीक),कंचनलता सब्बरवाल, रामकुमारी चौहान,मिथिलेश कुमारी मिश्र,विमला रैना,मन्नू भंडारी,कुंथा जैन, मृदुला गर्ग ,प्रतिभा अग्रवाल,शीला भाटिया ,कुसुम कुमार, शांति मेहरोत्रा, मृणाल पण्डे ,त्रिपुरारी शर्मा,आशा वर्मा,सरोज बिसारिया,आयशा अहमद,गिरीश रस्तोगी, मधु धवन, उषा गांगुली,मीरा कान्त, विभा रानी,नादिरा जहीर बब्बर आदि प्रमुख हैं | इन नाट्य धर्मी और प्रयोग धर्मी महिला नाटककारों में नादिरा जहीर बब्बर की ख़ास पहचान है |

उर्दू के प्रगतिशील एवं प्रतिष्ठित कलाकार सज्जात जहीर की बेटी नादिरा जहीर बब्बर हिंदी महिला नाट्य संसार का मशहूर नाम है | वे रंगमंच,सिनेमा,दूरदर्शन आदि क्षेत्रों में कार्यरत कलाकार हैं |वे नाट्य लेखिका, अभिनेत्री,निर्देशिका ,रूपान्तरकार, अनुवादक आदि नाटक के हर क्षेत्रों में अपना स्थान जमा लिया है| उनका एक नाट्य दल भी है, एकजुट नाम से | पेंसिल से ब्रश तक ,इतिहास तुम्हें ले गया कन्हैया, दयाशंकर की डायरी, सुमन और सना, आपरेशन क्लौडबर्स्ट, सकुबाई , जी जैसी आप की मर्जी आदि उनकी नाट्य - रचनाएँ हैं |कई नाटकों का अनुवाद भी उन्होंने किया है| प्रसिद्ध चित्रकार मकबूल फ़िदा हुसैन के जीवन पर आधारित नाट्यालेख है पेंसिल से ब्रश तक| इतिहास तुम्हें ले गया कन्हैया धर्मवीर भारती के कनुप्रिया और अंधा युग के आधार पर रचित नाटक है| काल्पनिक दुनिया में जीकर अपने आपको खोनेवाले दयाशंकर की कहानी दयाशंकर की डायरी में पेश की गयी है | साम्प्रदायिकता जैसी गंभीर समस्या को प्रस्तुत करने वाले नाटक हैं नादिरा जी के सुमन और सना तथा आपरेशन क्लौडबर्स्ट | सुमन और सना शीर्षक नाटक में सांप्रदायिक दंगे की वजह से बेहाल हुए मनुष्य की दास्तान पेश हुई है तो आपरेशन क्लौडबर्स्ट 3. में भारत के पूर्वांचल प्रदेश में पनप रहे आतंकवाद के अनेक कारनों पर प्रकाश डाला गया है |

महिला नाटककार होने के नाते नादिरा ज़हीर बब्बर ने स्त्री के जीवन के विविध पक्षों का चित्रण करके स्त्री समाज को जागृत करने और उसे अस्मिता बोध से संपन्न कराने का सराहनीय कार्य किया है | इस के संबंध में डॉ.भगवान जाधव का कहना है - "उन्होंने नाटकों में देश की नारी जीवन की समस्याएँ समाज के सामने रखकर देश काल के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रकट की है |"(2) प्रसिद्ध नाट्यालोचक जयदेव तनेजा ने अपने आधुनिक भारतीय नाट्य विमर्श नामक ग्रन्थ में नादिरा जी के नाटकों के प्रकाशन को महत्वपूर्ण घटना के रूप में रेखांकित किया है | उनका कहना है -"आधुनिक हिंदी रंगमंच पर अच्छे मौलिक नाटकों का अभाव है और इस दृष्टि से नादिरा जहीर बब्बर जैसी प्रतिभावान लेखिका के पांच रंग नाटकों(दयाशंकर की डायरी, सुमन और सना, आपरेशन क्लौडबर्स्ट, सकुबाई , जी जैसी आप की मर्जी, प्रकाशन - 2008) का एक साथ आ जाना किसी घटना से कम महत्वपूर्ण नहीं |"(3)

जी जैसी आप की मर्जी स्त्री अस्मिता की अभिव्यक्ति करनेवाला सशक्त नाटक है| इसमें स्त्री के प्रति रूढ़ीवादी समाज की मानसिकता को उभारा गया है |नारी अब भी पारंपरिक रूढ़ियों और वर्जनाओं की वजह दम घुट रही है |इसमें जी (हाँ) करने वाली स्त्री है और आपकी मर्जी का मतलब है पुरुष की मर्जी | स्त्री ताउम्र पुरुष की इच्छा के अनुसार ज़िंदगी जीती है | इस नाटक में पुरुष वर्चस्विता और पुरानी मान्यताओं के कारण आजीवन तकलीफ झेलकर कठपुतली सा जीवन बिताने के लिए विवश दीपा ,वर्षा , सुल्ताना और बबली के ज़रिए स्त्री अस्मिता की चर्चा की है| नाटक में स्त्री -शिक्षा के महत्व पर जोर दिया गया है | सकुबाई नादिरा जी का एकल (एकपात्रीय) नाटक है|इस नाटक का मंचन सफलतापूर्वक हुआ है| सकुबाई की भूमिका प्रसिद्ध अभिनेत्री सरिता जोशी ने निभायी है | |इसके संबंध में सरिता जोशी का कथन है - "सकुबाई का अनुभव मेरे लिए बहुत ही अलग रहा है |

हम सकुबाई जैसी औरतों को देखते तो हैं, उनसे काम भी लेते हैं,लेकिन जब मैं ने ये पात्र किया और खुद सकुबाई बनी तभी उनके जीवन को समझ सकी ,उनकी यातनाएँ ,उनकी अच्छाईयाँ-बुराईयाँ और सबसे बड़ी बात बड़ी-बड़ी समस्याओं में से वो अपने साहस और मेहनत की वजह से कैसे बाहर निकल

4. आती हैं और हर हाल में खुश रहती है |मुझे सकुबाई के द्वारा जीवन को समझने का एक बहुत बड़ा अवसर मिला | "(4) एक स्त्री की व्यथा असल में एक स्त्री ही जानती है |लेकिन निम्न वर्गीय परिवार की स्त्री की व्यथा आज की उच्च वर्ग की स्त्री जानने की कोशिश नहीं करती | नादिरा जी की पहचान वही है | उन्होंने सकुबाई जैसी स्त्रियों के जीवन को आलोकित करने का महत्वपूर्ण कार्य अपने इस नाटक द्वारा किया है |

हम कहते हैं कि स्त्री अबला है , दूसरों के इशारों पर नाचने वाली है|अशिक्षित स्त्री संसार का बोझ है| पुरुष की सहायता से ही वह जी सकती है |लेकिन सकुबाई नाटक पढने के बाद हमारा इस मंतव्य को हमें बदलना पड़ेगा |सकुबाई हमें यह सीख देती है कि स्त्री खुद अपने बलबूते पर भी जी सकती है | नादिराजी ने इस नाटक में नारी शिक्षा,अमीरों के खोखलेपन,आर्थिक कमजोरी ,यौन शोषण आदि के चित्रण के द्वारा स्त्री – समाज में अस्मिता बोध पैदा करने का प्रयास किया है | सकुबाई जिसका पूरा नाम शकुंतला है| वह निम्न वर्गीय कामगार औरत है | यह मध्यवर्गीय घरों में काम करके अपना जीवन बिताती है|वह गाँव में रहनेवाली भोलीभाली लड़की थी |गाँव में पुरुष वर्चस्व ज़्यादा होने के कारण सकुबाई और बहन वासंती पढ़ न सकीं |

इस पर वह निराश नहीं थी | भाई नितिन को स्कूल भेजा | वह कहती है -"वो लड़का था न ... नितिन के लिए स्कूल की नई वर्दी ,नये जूते ,मोज़े ,बस्ता –विस्ता सब लिया |...."(5) सरकार भी लड़कियों को पढ़ने – पढ़ाने के लिए अनेक सुविधाएँ दे रही है |फिर भी लड़कियों को काम करने का यंत्र मानकर रखने की प्रथा आज भी कायम है | अनाज के बंटवारे से लेकर बाबु लोगों से जो झगडा हुआ, इसके फलस्वरूप सकुबाई ,माँ और भाई नितिन को मामा के साथ मुंबई जाना पड़ा | वहाँ भी वह तन तोड़ मेहनत करती है | पिता और बहन गाँव में, माँ, सकु और भाई मुंबई में | एक ही परिवार दो टुकड़ों में बांटने पर उसके जीवन में अनेक अनहोनी बातें होने लगीं |जीवन के अनुभवों ने उसको अनेक पाठ पढ़ाये |

जब सकुबाई मामा के घर में रहती थी तब वह यौन शोषण का शिकार भी बनी थी | छोटे मामा ने उसका बलात्कार किया था | लेकिन माँ ने यह जाना तो बात दबाई | अंत में माँ

5. जब सकुबाई मामा के घर में रहती थी तब वह यौन शोषण का शिकार भी बनी थी | छोटे मामा ने उसका बलात्कार किया था | लेकिन माँ ने यह जाना तो बात दबाई | अंत में माँ ,सकु और भाई को मामा का घर छोड़ना पड़ा | दिन भर तन तोड मेहनत करके रात में थक कर सोते वक्त भी स्त्री सुरक्षित नहीं है | पिता, भाई, मामा जैसे निकट के रिश्तेदारों द्वारा छोटी बच्चियों को अपनी हवस की शिकार बनाये जाने की खबर हम अक्सर पत्र-पत्रिकाओं और दृश्य-श्रव्य माध्यमों से पढ़ते ,सुनते और देखते हैं | भारत में बलात्कार के लिए कठिन सज़ा का अभाव होने के कारण ही ऐसे होते हैं |बेटी को बेटी के रूप में,बहन को बहन के रूप में देखने का पाठ पुरुष को पढ़ाना भी आवश्यक है |

लड़कों को हर कहीं ऊँचा स्थान मिलता है | मामा के घर से निकलते वक्त उन्होंने कहा था कि नितिन को वहाँ छोडकर जाए |तब सकु की माँ का स्वाभिमान जाग उठा | वह कहने लगी –"क्यों छोड़ दूं नितिन को तुम लोगों के साथ...? वो मेरा बेटा है | नितिन हमारे साथ ही रहेगा |"(6) यहाँ यह दिखाने का प्रयास नादिरा जी ने किया है कि अनपढ़ और गंवारू होते हुए भी स्त्री अपने बच्चों के लिए सजग है |

लड़कियों की शादी हर माँ - बाप के लिए एक बोझ है |वे अपने हाथ जल्दी पीला करना चाहते हैं | सकु की बहिन वासंती एक मुसलमान रिक्षेवाले से प्यार करती है| यह

जानने से सकु की शादी के लिए माँ - बाप उत्सुक हो गए |यशवंत घाघ नामक एक युवक से उसकी शादी तय की गयी |वह थाने की चुंगी पर काम करता था | पहली रात को ही यशवंत ने सकु से कहा -"देखो सकया मैं ऊपर की कमाई से घर चलनेवाला नहीं | तुझे इसी से ही घर का खर्च चलाना होगा |"(7) सकु ने दिलासा दिया भी था – काय को तू चिंता करता है|मेरे हाथ हैं न काम करने के लिए ?(8) उसका पति अच्छा था, फिर भी उस में एक कलंक के रूप में और एक स्त्री के साथ लफडा था | अंत में सकु की प्रार्थना और अच्छे व्यवहार से पति बदल गया | लेकिन उसको एड्स हो गया था |ये सब होते हुए भी सकुबाई ने हिम्मत न हारी |उसने तन तोड़ मेहनत करके अपने बच्चों को पढ़ाया , पति को दवा का पैसा दिया| इस प्रकार यह नाटक एक असहाय अबला स्त्री सकुबाई की दास्तान पेश करता है जिसने अपने मनोबल और आत्मविश्वास से जीवन में जीत हासिल की | यह स्त्री विमर्श का एक आदर्श है| नाटककार ने इसमें स्त्रियों के लिए एक ऐसा आदर्श प्रस्तुत किया कि जीवन की विजय की चुनौतियों से हारने में नहीं,

6. बल्कि उनका सामना करके अपने पैरों पर खडे होने में है|यही स्त्री अस्मिता है |

गाँव वालों के अनुसार शहर के लोग भी भोले - भाले हैं | आजकल स्थिति बदल गयी है |फिर भी प्रेम के लिए विश्वास काफी है |सकु की बहन भी रिक्शेवाले पर विश्वास रखकर उसके साथ भाग गयी |इससे पिता की मृत्यु हुई | उसे सुननी पडी कि वेश्या बनकर बहन कमाटीपुरा में रहने लगी है | अंत में उसे पुलिस के मुँह से यह भी सुननी पडी कि वासंती ने आत्महत्या की | वह सोच में पड़ गयी - "न जाने क्या - क्या सोचकर वह घर से भागी होगी ....?कैसे - कैसे सपने होंगे उसके मन में ...|क्या सोचा होगा ...? और क्या मिला ...एक साड़ी ...एक पंखा ...एक स्टूल ...|"(9) जीवन में ऐसी अनेक दुर्घटनाओं के होने पर भी सकुबाई ने हिम्मत न हारी | उसने बहन का शव बड़ी तकलीफ लेकर पुलिस से छुडवाया और उसका क्रियाकर्म भी पति और बेटे से करवाया है | इस तरह एक सच्ची बहन का फर्ज़ भी उसने निभाया|

बेटी साइली को उच्च शिक्षा दिलाई |सकु को उसकी माँ ने पढने नहीं दिया तो सकु ने अपनी बेटी को पढाया - लिखवाया |उसने जाना था कि शिक्षा ही स्त्री मुक्ति का रास्ता खोलती है |नाटक में स्त्री शिक्षा द्वारा अस्मिता की स्थापना पर बल दिया गया है |सकु याद करती है - "चलो एक तो फर्क पड़ा | मेरी आई ने पढने के लिए मुझे थप्पड़ मारा था |आज मेरी लडकी मुझे पढने के लिए कहती है |...फर्क तो पडा ...|"(10) एक पढ़ी -लिखी औरत सकु की तरह यातनाएँ झेल नहीं सकती | साइली ने अपनी माँ को शिक्षित होने की प्रेरणा दी |

बाद में साइली मशहूर कवि बनी |उसने माँ पर एक कविता लिखी और उसे सुनाई

तेरे पाँव चलते – चलते थक गए
तेरे हाथ बर्तन घिसते –घिसते सड गए
किसी दिन भी तू जी भरके सो नहीं पाई
तेरे कंधी कपडे धोते – धोते अकड गए
चल माँ उठ , सर उठा , देख समय आया है |
उठ माँ उठ , हाथ बढा , देख समय आया है ||(11)

सकुबाई हमें अपने घरों में काम करने वालों के जीवन में झाँकने का मौक़ा प्रदान करती है| ये घरेलू नौकर असंगठित है |उनके काम , तकलीफ, दिक्कत और मेहनत पर हम नज़र नहीं डालते | नाटक में सकुबाई कहती है – हम लोग दिन- रात मेहनत करते हैं | मेहनत करते – करते बूढ़े हो जाती हैं ... और मर जाते हैं ... न कोई हमें पूछता है न याद करता है .. | (12)

विविध मध्यवर्गीय परिवारों में घरेलू काम करने के कारण सकु को यह जानने का मौका मिला कि प्रत्येक परिवार में क्या – क्या हो रहे हैं | मध्यवर्गीय परिवार में लोग पढ़े - लिखे हैं, कामकाजी हैं और उनका आर्थिक

स्तर भी ऊंचा है , फिर भी स्त्री आत्मनिर्भर नहीं है| वे लोग काम के लिए सुबह जाते वक्त घर का सारा काम नौकरानी पर छोडकर सब कुछ अस्त - व्यस्त करके भाग जाते हैं | अपने घर के बारे में उनको चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है| क्योंकि नौकरानी सब कुछ संभालेगी | सकुबाई को दिनरात काम करने पर भी छुट्टी नहीं मिलती | दूसरों के दुःख - दर्द न समझनेवाले लोगों के बारे मे वह भी चिंतित है| बड़े घर की बातें बाहर नहीं जातीं ,पर घर की रसोइवाली सब जानती है | सकुबाई भी उस घर की सब बातें पूर्ण रूप से जानती है |मालिक को अपने दफ्तर की किसी लड़की से अनहोनी सम्बन्ध होने पर मेमसाब रूठ कर मैके जाने के लिए खड़ी हो तो सकुबाई उसे शांत करती है और समझाती है –"आप क्यों जाओगी मम्मी के घर ?...इस तरह आपको देखकर आपके घरवाले क्या सोचेंगे?.....ये घर आपका भी तो है |आपका अपना ब्यूटी पार्लर है |ब्यूटी पार्लर में पूजा मेमसाब का नाम है | काम है |...आप अपने घर पर रहो |पहले अपने को ठीक करो और अपने बच्चों को संभालो |.."(13) पढ़ी- लिखी पूजा मेमसाब में भी आत्मा निर्भरता, स्वतंत्रता और पुरुष से अपना हिस्सा मांगने का धैर्य भरने का प्रयत्न सकुबाई करती है |इस में वह सफल भी होती है| बड़े घर की औरत के द्वारा की गयी चोरी का खुलासा भी वह करती है | हम अक्सर घरों में काम करनेवाली औरत को ही बुरी नजर से देखते हैं | इस तरह स्त्री पर हो रहे अन्याय, अत्याचार, सब कुछ सकुबाई भी झेलती है | दुनिया के सारे अपमान ,अन्याय सब कुछ स्त्री ही सहती है | उच्च वर्ग और निम्न वर्ग में अनेक बातों में समानता है | सकुबाई की इच्छाशक्ति ,

8

अपनी अस्मिता कायम रखने का धैर्य ,पढ़ी - लिखी और स्वावलंबी स्त्री को भी जागृत करने का कार्य सराहनीय है| वे नादिरा ज़हीर बब्बर जी अपनी नाट्य - रचना के आरम्भ में कहती हैं - "ये नाटक आपको बाध्य करता है तथाकथित उच्चवर्गीय सुसंस्कृत पढ़े-लिखे और सामाजिक रूप से संवेदन शील समाज के पाखंड ,ढोंग के बारे में सोचने के लिए | और प्रेरित करता है एक साधारण निम्नवर्गीय स्त्री के मनोबल और खुद की मदद करने की ताकत सीख लेने की |"(14) यह अनपढ़, आत्मनिर्भर और अस्मितावाली स्वावलंबी स्त्री की विजय है |जीवन में अनेक कठिनाईयों के होते हुए भी हिम्मत से लड़ने का सन्देश इस नाटक के ज़रिये नादिरा जहीर बब्बर जी हमें देती हैं | स्त्री अस्मिता और श्रम की गरिमा जानने का मौका इस नाटक के जरिये हमें मिलता है |

सन्दर्भ सूची

1. मृणाल पांडे – परिधि पर स्त्री – पृ. 9.
2. डॉ. भगवन जाधव –हिंदी महिला नाटककार – पृ.133.
3. जयदेव तनेजा – आधुनिक भारतीय नाट्य-विमर्श – पृ.288.
4. नादिरा जहीर बब्बर- सकुबाई (सकुबाई के बारे में सरिता जी का वक्तव्य)पृ.9
5. नादिरा ज़ाहिर बब्बर – सकुबाई – पृ.21
6. वही , पृ.31
7. वही ,पृ.33
8. वही ,पृ.33
9. वही ,46
10. वही ,पृ.63
11. वही , पृ. 63-64
12. वही , पृ.49
13. वही , पृ.39-40
14. 9
15. वही (सकुबाई – सफाई घरों की और हृदयों की...),पृ.7